ग्रीन रिवोल्ट

हरित-नीरा रहे वसुंधरा

पेजः 4
सुगर ट्री का पौधा सुगर के मरीजों के लिये है उपयोगी

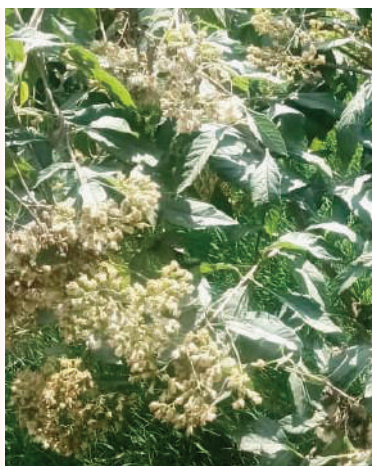

रविवारीय, 01 - 07 मार्च 2020 वर्ष- एक, अंक-30, रांची, कुल पृष्ठ 4 हिन्दी साप्ताहिक R.N.I. No. JHAHIN/2019/78094 www.greenrevolt.news मूल्यः 2 रूपये

ग्रीन रिवोल्ट के पाठकों से आग्रह है कि आप पर्यावरण, कृषि, जल संरक्षण, पशुपालन, बागवानी , पेंट्स, वृक्षारोपण से संबंधित खबरें, समस्यायें, लेख,सुझाव, प्रतिक्रियायें या तस्वीरें हमें अवश्य भेजें। हमारा इमेल एवं ह्वाट्सएप नंबर है।

greenrevolt2019@gmail.com

9798166006

प्रशांत करण की पस्तकों का लोकार्पण

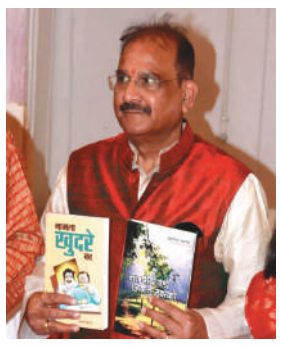

रांची :1 मार्च को ऑडे हाउस के सभागार में झारखण्ड साहित्य संस्कृत मंच के उपाध्यक्ष सेवा निवृत्त अधिकारी प्रशांत करण की 'मामला खुदरे का'(व्यंग्य संग्रह) एवं 'मत बांध मुझे'(काव्य संग्रह) नामक दो कृतियों का झारखण्ड हिंदी साहित्य संस्कृत मंच एवं प्रभात प्रकाशन के संयुक्त तत्वाधान में लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर मुम्बई विश्व विद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ राम जी तिवारी मुख्य अतिथि के रुप में तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में,नव गीत के पुरोधा डॉ बुद्धिनाथ मिश्र,श्रीमान कमल नयन चौबे पुलिस महानिदेशक सह महानिरीक्षक झारखण्ड,डॉ गुरुचरण सिंह प्रसिद्ध साहित्यकार, के साथ डॉ माया प्रसाद , हरेराम त्रिपाठी चेतन जी,प्रभात प्रकाशन के राजेश शर्मा,मंच के संरक्षक न्यायमूर्ति श्री विक्रमादित्य प्रसाद, मंच के अध्यक्ष कामेश्वर प्रसाद निरंकुश, श्री एम वी राव, डॉ अशोक प्रियदर्शी, शैलेश पण्डित,श्री निरंजन प्रसाद, हैरत फर्रुखावादी, नसीर अफसर, डॉ जंग बहादुर पांडेय, डॉ वैद्यनाथ मिश्र सुनील बादल,राजकुमार श्रीवास्तव,श्रीमती अनिता रश्मि, श्रीमती अंकिता सिन्हा,कमल बोस,महादेव विष्णु राव,श्री नायडू जी, श्री अनिल पालटा,श्री अशोक कुमार सिन्हा,डॉ यशोधरा राठौर , शिल्पी कुमारी,श्री आदि के साथ दो सौ से अधिक साहित्य प्रेमी और श्रोतागण उपस्थित थे।

माननीय राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने विकास भारती बिशुनपुर का परिभ्रमण कर संस्थान के कार्यों की जानकारी प्राप्त की कहा

एक अच्छा इंसान बनना शिक्षा की कसौटी है

संवाददाता

रांची/बिशुनपुर :राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने विकास भारती बिशुनपुर के सौजन्य से आयोजित स्वरोजगारी एवं स्वावलंबी कृषि ग्रामोद्योग एवं कौशल विकास योजना के कार्यक्रम में कहा कि बिशुनपुर आना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि बिशुनपुर की धरती त्याग, बलिदान, संघर्ष एवं स्वाभिमान की धरती है। उन्होंने कहा कि देश बदल रहा है और हम सबको भी बदलने की जरूरत है। मनुष्य होकर हमें यह प्रयास करना है कि हमारे आचरण में अंतर नहीं होना चाहिए। उन्होंने शिक्षा के विषय चर्चा करते हुए कहा कि शिक्षा ऐसा संसाधन है जो हम अपने बच्चों के साथ-साथ लोगों को भी दे सकते हैं। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित लोगों से कहा कि आप अपने बच्चों को स्कूल अवश्य भेजें, साथ ही उन्हें अच्छा आचरण दें। जिससे वे अच्छे एवं भले की पहचान कर सकें। उन्होंने कहा कि डिग्री प्राप्त कर लेने से ही पूर्णतया शिक्षित नहीं हो जाते अपितु शिक्षित वह व्यक्ति है जो एक अच्छा इंसान है। उन्होंने कहा कि एक अच्छा इंसान बनना शिक्षा की कसौटी है। उन्होंने आदिवासी समुदाय के लोगों से मिलने की गहरी इच्छा जताई।

किसानों से संवाद करने के पश्चात उन्होंने प्रदर्शनियों एवं स्टॉलों का अवलोकन किया। इसके साथ ही सृजन परिसर स्थित सिंगबोंगा भवन के सम्मुख विभिन्न जनजातिय समूहों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं गाँधी संग्रहालय का भी अवलोकन किया। उन्होंने ज्ञान निकेतन परिसर में जनजातीय बच्चों के साथ वनवासी संस्कृति का अवलोकन किया। उन्होंने ज्ञान निकेतन परिसर में स्थापित वीरांगना फुलो-झानो की प्रतिमा पर पुष्प अर्पण किए। इसके साथ ही

ज्ञान निकेतन परिसर में राष्ट्रपति सहित माननीय अतिथियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया। राष्ट्रपति विकास भारती परिसर में संस्थान द्वारा किए जाने वाले कार्यक्रमों के स्टॉल को देखकर काफी प्रसंशा व्यक्त की। छऊ नृत्य के कलाकारों की प्रस्तुति को सराहा तथा स्कूली बच्चों के साथ सामुहिक फोटोग्राफी में सहभागिता किया। टाना भगत समुदाय को उन्होंने महात्मा गाँधी जी का सच्चा अनुयायी बताया।

इससे पूर्व माननीय राष्ट्रपति, माननीय राज्यपाल, केन्द्रीय मंत्री व अन्य के द्वारा विकास भारती बिशुनपुर परिसर में स्थित भगवान बिरसा मुण्डा की प्रतिमा पर पुष्प अर्पण कर श्रद्धांजलि दिया गया।

माननीय राष्ट्रपति ने बाबा मंदिर में षोड्शोपचार विधि से पूजा अर्चना की

माननीय राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद ने देवघर में बाबा मंदिर पहुँचकर देश की सुख-समृद्धि की कामना बाबा बैद्यनाथ से की। इस अवसर पर माननीय राष्ट्रपति के साथ माननीय राज्यपाल श्रीमती द्रौपदी मुर्मू उपस्थित थी। षोड्शोपचार विधि के द्वारा बाबा बैद्यनाथ की पूजा-अर्चना पुरोहितों द्वारा कराई गई। पूजा के उपरांत माननीय राष्ट्रपति को देवघर उपायुक्त श्रीमती नैंसी सहाय ने मंदिर श्राईन बोर्ड की तरफ से अंग वस्त्र एवं स्मृति चिन्ह समर्पित कर अभिनंदन किया गया।

राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविंद देवघर आने वाले तीसरे राष्ट्रपति हैं। इससे पहले देश के पहले राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद तथा दो बार बतौर राष्ट्रपति श्री प्रणव मु-खर्जी बाबा बैद्यनाथ की पूजा-अर्चना कर चुके है।

कार्यक्रम में श्रीमती द्रौपदी मुर्मू, माननीय राज्यपाल झारखण्ड, अर्जुन मुण्डा, केन्द्रीय मंत्री जनजातीय मामले मंत्रालय, भारत सरकार, रामेश्वर उराँव, वित्त मंत्री, झारखण्ड सरकार सहित गणमान्य अतिथि एवं प्रशासनिक पदाधिकारी उपस्थित थे।

राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने दी राष्ट्रपति को एयरपोर्ट पर विदाई

विदाई

रांची :माननीय राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद को बिरसा मुंडा एयरपोर्ट रांची में माननीया राज्यपाल द्रौपदी मुर्मू और मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने विदा किया इस मौके पर राष्ट्रपति ने मुख्यमंत्री को लोकतंत्र के स्वर नामक पुस्तक भेंट की मुख्य सचिव डीके तिवारी ,मंत्रिमंडल सचिवालय एवं निगरानी विभाग के प्रधान सचिव अजय कुमार सिंह,पुलिस महानिदेशक केएन चौबे ,दक्षिणी छोटानागपुर के आयुक्त तथा रांची के उपायुक्त और वरीय पुलिस अधीक्षक समेत कई आला अधिकारी और सेना के अधिकारी भी राष्ट्रपति को विदा करने के लिए मौजूद थे।

राजीव लोचन बख्शी ने निदेशक सूचना एवं जनसंपर्क विभाग का प्रभार ग्रहण किया

सूचना भवन रांचीः भारतीय वन सेवा के अधिकारी श्री राजीव लोचन बख्शी ने 28 फरवरी को निदेशक सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखंड का अतिरिक्त प्रभार ग्रहण किया। वे झारखण्ड के वन संरक्षक सहित सदस्य सचिव, झारखण्ड राज्य प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के पद पर भी पदस्थापित है।

रांची -पटना- राँची के बीच होली स्पेशल ट्रेन चलेगी

संवाददाता

रांची : होली के त्यौहार में यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुए रेल प्रशासन द्वारा यह सुनिश्चित किया गया है कि राँची - पटना - राँची के बीच एक विशेष होली स्पेशल ट्रेन विशेष शुल्क के साथ चलाई जाएगी` होली स्पेशल ट्रेन की समय सारणी निम्न अनुसार है

ट्रेन संख्या 08623 रांची से पटना के लिए दिनांक 07.03.2020 (शनिवार) को (केवल एक ट्रिप) रांची प्रस्थान 23:55 बजे होगा, मुरी प्रस्थान 1:20 बजे, बरकाकाना प्रस्थान 2:40 बजे, हजारीबाग टाउन प्रस्थान 3:42 बजे, कोडरमा प्रस्थान 5:22 बजे, गया प्रस्थान 7:20 बजे, जहानाबाद प्रस्थान 8:17 बजे एवं पटना आगमन (रविवार) 9:30 बजे होगा`

ट्रेन संख्या 08624 पटना से राँची के लिए दिनांक 08.03.2020 (रविवार) (केवल एक ट्रिप) पटना प्रस्थान 10:45 बजे, जहानाबाद प्रस्थान 11:37 बजे, गया प्रस्थान 13:25 बजे, कोडरमा प्रस्थान 14:47 बजे, हजारीबाग टाउन प्रस्थान 15:22 बजे, बरकाकाना प्रस्थान 18:50 बजे, मूरी प्रस्थान 20:25 बजे राँची आगमन (रविवार) 21:40 बजे होगा`

इस ट्रेन में कुल 18 कोच होंगे जिसमें सामान यान के 02 कोच , द्वितीय श्रेणी स्लीपर कोच 10, एसी थ्री टीयर के 03 कोच एवं अनारक्षित 03 कोच होंगे ।

ट्रेन संख्या 18635 (रांची - सासाराम एक्सप्रेस) का राँची - टोरी के बीच समय सारणी में परिवर्तने

दिनांक 01.03.2020 से ट्रेन संख्या 18635 (रांची – सासाराम एक्सप्रेस) का रांची – टोरी के बीच समय सारणी में परिवर्तन होगा , इसका राँची प्रस्थान 17:00 बजे, पिसका आगमन 17:16 बजे प्रस्थान 17:17 बजे, नगजुआ आगमन 17:45 बजे प्रस्थान 17:46 बजे, लोहरदगा आगमन 18:03 बजे प्रस्थान 18:05 बजे, तथा टोरी आगमन 19:10 बजे प्रस्थान 19:12 बजे होगा` टोरी से सासाराम के बीच समय सारणी में कोई परिवर्तन नहीं है

हजारीबाग वन प्रमंडल के आरसीसीएफ संजीव कुमार को इलाहाबाद में 2019 का पर्यावरणविद् का पुरस्कार

एजेंसियां : इलाहाबाद में आयोजित छठे इंटरनेशनल कांफ्रेंस ऑन एनवायरनमेंटल एंड इकोलॉजी के दौरान हजारीबाग वन प्रमंडल के आरसीसीएफ संजीव कुमार को इलाहाबाद में 2019 का पर्यावरणविद् का पुरस्कार मिला है। इलाहाबाद युनिवर्सिटी में 24 से 26 फरवरी तक चल रहे छट्ठे अंतर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस में उन्हें विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था। उन्होंने मौके पर अपने पर्चे भी पढे। इस सम्मान के मिलने से उन्होंने खुशी जाहिर की है और कहा है कि यह अंतर्राष्ट्रीय स्तर का आयोजन होता है। इंटरनेशनल फाउंडेशन फॉर एनवायरनमेंट एंड इकोलॉजी की ओर से यह पुरस्कार दिया गया है। उन्होंने कहा कि इसी विश्वविद्यालय से वह 1992 में पास हुये थे।

बीएयू से रिलीज हो सकती है गेहूं और सरसों की नई वेराईटी

राजेश कुमार

रांची : बिरसा कृषि विश्वविद्यालय से गेहूं और सरसों की नई वेराइटी जल्द रिलीज हो सकती है। अनुसंधान निदेशक ने प्रक्षेत्र भ्रमण के दौरान इन किस्मों की सारी प्रक्रिया और प्रयोग पूरी कर प्रस्ताव अनुसंधान परिषद की बैठक में रखने का निर्देश दिया है।

आनुवंशिकी एवं पौधा प्रजनन विभाग द्वारा रबी मौसम में लगाये गए विभिन्न प्रायोगिक फसलों के निरीक्षण के लिए 29 फरवरी को विश्वविद्यालय के पश्चिमी सेक्शन में प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। पौधा प्रजनन, सस्य, पौधा रोग, फसल दैहिकी, मौसम विज्ञान एवं कीट विज्ञान से जुड़े शोध वैज्ञानिकों एवं स्नातकोत्तर छात्र-छात्राओं ने चार घंटे तक गेहूं, जौ, चना, मक्का, मसूर, मटर, सरसों, तीसी आदि की प्रायोगिक फसलों के खेत का भ्रमण किया। फसल स्थिति का जायजा लिया।

अनुसंधान निदेशक डॉ डीएन सिंह ने कहा कि सभी क्षेत्र अधिदर्षकों को हमेशा खेत में रहना है। कार्यालय में नहीं बैठना है। उन्हें अपनी परियोजना से संबंधित सभी फसलों की अनुशंसित प्रति हेक्टेयर बीज दर, पौधा से पौधा और पंक्ति से पंक्ति के बीच की दूरी तथा उर्वरक की अनुशंसित मात्र के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए। दलहनी और तेलहनी फसलों में थिनिंग और गैप फिलिंग आवश्यक है। वर्तमान रबी मौसम में काफी वर्षा हो गयी है, इसलिए सीमित सिंचाई में विभिन्न प्रभेदों के प्रदर्शन के लिए लगाये गये प्रयोगों की तकनीकी उपयोगिता नहीं रह गयी। उन्होंने पिछले कई वर्षों से बेहतर प्रदर्शन कर रही गेहूं की प्रविष्टि जेकेडब्लू- 261 में सस्य और पौधा संरक्षण से संबंधित प्रयोग पूरा कर रिलीज प्रस्ताव लाने का निर्देश गेहूं वैज्ञानिक को दिया।

अनुसंधान निदेशक ने सरसों के प्रायोगिक फसलों की स्थिति की सराहना की। कहा कि प्रविष्टि टीएम-179 का रिलीज प्रस्ताव अनुसंधान परिषद् की अगली बैठक में रखा जाय। प्रक्षेत्र भ्रमण में डॉ आरआर उपासनी, डॉ जेडए हैदर, डॉ सोहन राम, डॉ डीके शाही, डॉ एस कर्मकार, डॉ रमेश कुमार, डॉ पीके सिंह, डॉ रविंद्र प्रसाद, डॉ कृष्णा प्रसाद, डॉ अरुण कुमार सहित शोध वैज्ञानिक एवं स्नातकोत्तर छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में शामिल थे।

स्वच्छ जल का आदिवासी समाज से संबंध

मुकेशरंजन

रांची : स्वच्छ जल के संबंध में आदिवासी समाज का अपना दृष्टिकोण था। तभी तो समाज में बरसात शुरू होने के बाद यानि आसाढ़ महीने के द्वितीया से लेकर राजी बहुरारना अर्थात भादो महीना के सातवें दिन तक दूसरे गांव में मेहमान जाना मनाही था तथा कोई भी शुभ कार्य, जैसे शादी-व्याह का शुरूआत करना आदि के लिए वर्जना की गयी थी।

वर्तमान में भी परम्परागत उरांव समाज द्वारा शादी-व्याह के रस्म का शुभारंभ करमा त्योहार (भादो एकादशी) के बाद ही किया जाता है। इस वर्जना एवं मनाही में स्वच्छ जल की स्वास्थ्य शिक्षा की अवधारना निहित है। बरसात शुरू होने के बाद नदी-नालों के जल में रोग के कीटाणुओं की मात्रा अधिक रहती है- जैसे, हैजा, आंत्रशोथ, मियादी बुखार (टायफड) आदि। ये रोग कीटाणु युक्त पानी पीने से होता है। शायद भादो महीने के प्रथम सप्ताह तक दूसरे गांव जाकर मेहमाननवाजी किया जाना मनाही होने के पीछे तर्क रहा होगा कि

भादो महीने के प्रथम सप्ताह तक खेत-खलिहान एवं नदी-नालों का पानी में रोग के किटाणु में कमी हो गयी होगी और हैजा आदि का खतरा होगा। इसी तरह बरसात आरंभ होते ही कई तरह के वायरल इंफेक्शन एक महामारी की तरह होते रहते थे। वर्तमान में चिकित्सा विज्ञान द्वारा कई वायरल इन्फेक्शन रोग पर काबू पा लिया गया है। वायरल इन्फेक्शन का ठीक-ठीक इलाज कर पाना विज्ञान के लिए भी एक पहेली बना हुआ है।

यों तो बहुत से वायरल बीमारी से बचने के लिए रोग से पूर्व के बचाव के तरीके को ही अच्छा माना गया। शायद आदिवासी समाज में कई ऐसे कारणों को न समझ पाने के चलते इसे देवी प्रकोप मान लिया गया और बरसात आरंभ होने से पहले (जेठ महीना में) पच्चो करम/बुढ़िया करम/रोगे करम के नाम से रोग विमुक्ति के लिए पूजा अनुष्ठान करने की विधि अपनायी गयी। बुढ़िया करम के दिन गांव की बुजुर्ग महिलाएं उपवास कर पूरे घर को गोबर से लीपती हैं और अखड़ा के पास एक टोकरी में जमा करती हैं। इस बीच गांव के बुजुर्ग किसी निर्धारित स्थान से करम पेड़ की तीन डाली काटकर लाते हैं और अखड़ा में पहान द्वारा गाड़ कर पूजा-अर्चना की जाती है। इस पूजा का आशय यह है कि दैवीय कृपा से गांव में रोग-बीमारी न हो। गांव के देवी-देवता गांव में बीमारी न आने देवें।

कुपोषण के संबंध में आदिवासियों को जानकारी थी किन्तु वे किसी विशेष उपचार विधि को नहीं अपना पाये। यों तो नवजात शिशु को स्तनपान कराने का ही उनका रिवाज है किन्तु जो बच्चे को मां का दूध नहीं मिल पाता। वैसे बच्चे अकसरहां कुपोषित पाये जाते हैं। दूसरी बात, पूर्व में गांव में दलहन की खेती अब की तुलना में अधिक होती थी, जिससे प्रोटीन की कमी से होने वाले कुपोषण में कमी रहती थी।

केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुण्डा केंद्रीय योजनाओं के कार्यों की समीक्षा की

रांचीः जनजातीय विकास से जुड़े अधिकारियों का कार्य अन्य विभागों के अधिकारियों के कार्य से बिल्कुल अलग है। संविधान के अनुरूप जनजातीय समाज के अधिकारों की रक्षा कैसे की जाए इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए। राज्यों में ट्राईबल एडवाइजरी काउंसिल की बैठक नियमित हो। टीआरआई अपने अनुसंधान का दायरा व्यापक करते हुए पॉलिसी इंटरवेंशन का कार्य करें। केंद्रीय मंत्री, जनजातीय मामले मंत्रालय अर्जुन मुण्डा ने रांची के रेडिसन ब्लू में केंद्रीय मंत्रालय के अधिकारियों के साथ झारखण्ड राज्य में चल रही केंद्रीय योजनाओं की राज्य सरकार के अनुसूचित जनजाति कल्याण विभाग के अधिकारियों के साथ समीक्षा करते हुए यह बात कही।

टीआरआई अनुसंधान पर फोकस करते हुए योजना बनाये

अर्जुन मुंडा ने बैठक में कहा कि टीआरआई अनुसंधान पर फोकस करते हुए योजनाएं बनाएं। केंद्र सरकार इसमें हर संभव मदद करेगी। जनजातीय मामलों से जुड़े सभी आंकड़ों का विश्लेषण करें।

युवाओं को ही आगे आना होगा

भारत जैसे देश में बाजार से लेकर राजनीति तक में युवाओं की जरूरतों , सोंच और उनके शौक को भुनाया जाता है। आइटी, फैशन, खानपान, मनोरंजन उद्योग सभी युवा वर्ग को ध्यान में रखकर ही खुद को प्रस्तुत कर रहे हैं। कारण स्पष्ट है भारत में युवाओं की बड़ी आबादी जो बाजार के लिये बहुत बड़ा उपभोक्ता है। अब तक राजनीति , बाजार और अन्य क्षेत्रों ने इस बड़ी युवा आबादी को सिर्फ और सिर्फ उपयोगी सामान की तरह ही देखा है। युवाओं को खुद को महज एक उपभोक्ता या अनियंत्रित शक्ति बनने से रोकना होगा। अगर देश का यह युवा वर्ग पर्यावरण, जल, वन संरक्षण के साथ ही बाजार की ठगी के खिलाफ थोड़ा सा भी मुखर हो जाये तो यह देश के स्वास्थ्य के लिये बहुत श्रेयस्कर होगा। आज का युवा अगर खुद प्लास्टिक में पैक या परोसे जाने वाले उत्पादों का बहिष्कार करे दे तो स्वतः ही एकल प्लास्टिक की समस्या समाप्त हो जायेगी। युवा अगर डिफॉरेस्टेशन, पहाड़ों की ब्लास्टिंग, सौंदर्यीकरण के नाम पर इकोसिस्टम की बर्बादी के खिलाफ आवाज उठाने लगे तो सरकारों से लेकर माफियाओं तक पवर एक दबाव बनेगा। लेकिन ये दुर्भाग्य है कि कुछेक एकल प्रयासों को छोड़ कर हमारा युवा वर्ग खुद में मस्त है। वह महंगे स्मार्टफोन, गजेट से लेकर कैरियर के लिये तो चिंतित है,पर उसकी सूची में देश के पर्यावरण की चिंता नहीं है। मुंबई के आड़े जंगलों की कटाई पर मुखर विरोध को छोड़ शायद ही कभी किसी पर्यावरणीय मुद्दे पर युवाओं को आंदोलित होते हुये हम देखे हों। एक और अहम बात है कि, शहरों में रहने वाले युवाओं में इन विषयों की समझ भी कमतर है। यही कारण है कि वह बेमौसम बारिश में गिरने वाले ओलों की तस्वीरें तो युवा शेयर करता है, पर इससे होने वाले रबी फसल की बर्बादी की जानकारी नहीं रखता। भविष्य में अंधे शहरीकरण के बीच अंततः जल, जंगल, जमीन बचाने के लिये युवाओं को ही आगे आना होगा।

हमारा युवा खुबसूरत पर्यटन स्थलों से लेकर जंगलों, पहाड़ों , झीलों के पास जाकर सेल्फि तो लेता है, पर उन जगहों के संरक्षण के लिये वह कभी नहीं सोंचता। जंगल, जल,पर्यावरण बचाने का ठेका कुछेक चिंतित लोगों, संगठनों के मत्थे ही है। कभी किसी युवा को बाजार में एकल प्लास्टिक या थर्मोकोल पेपर के बने प्लेटों ग्लासों का विरोध करते नहीं पायेंगे। जिन पेड़ों बाग बगीचों के बीच वो बैठते हैं उसकी बर्बादी के खिलाफ वो आवाज नहीं उठायेंगे। आज जरूरत है कि युवा पर्यावरण के प्रति सचेत हों, क्योकि औरों ने जो बर्बाद करना था वो कर दिया है बाकी बचे हुये को युवाओं को ही सहेजना होगा।

नदियों को बचाने के लिए भोपाल में जुटेंगे नदी विशेषज्ञ

भोपाल में एक और दो मार्च को नदी घाटी विचार मंच होगा, जिसमें गंगा, नर्मदा, भागीरथी, गोदावरी सहित कई नदी घाटी पर चर्चा होगी। देशभर की नदियों पर 24 घंटे जल आपूर्ति, सिंचाई, मछलीपालन और कारखानों में पानी को जरूरत की वजह से बहुत अधिक दबाव है। तकरीबन सभी नदी घाटी प्रदूषण के अलावा बड़े बांध के निर्माण और पानी के कुदरती बहाव की कमी से जूझ रही है। इन नदियों के दोहन की योजनाएं तो कई हैं लेकिन नदी बचाने के लिए समुचित जल नियोजन की बात कहीं नजर नहीं आती। जिस वजह से नादियों के अस्तित्व पर खतरा उत्पन्न हो गया है। ऐसे खतरों को समझने वाले पर्यावरणविद भोपाल में एक और दो मार्च को होने वाले नदी घाटी विचार मंच में आकर चर्चा करने वाले हैं। भोपाल के गांधी भवन में शुक्रवार को कार्यक्रम के बारे में बताते हुए सामाजिक कार्यकर्ता मेधा पाटकर ने कहा कि इसमें नर्मदा, गंगा, गोदावरी, यमुना, कृष्णा, पोलावरम, सिंगरी, बारू, रेवा, कावेरी, कोसी, विश्वामित्र, साबरमती, गोसीखुर्द, हलोन सहित तमाम नदी घाटी के विभिन्न पहलुओं पर काम करने वाले लोग आएंगे।

यहां दो दिनों तक देश भर के नदी घाटियों के खतरे और जल नियोजन पर चर्चा की जाएगी और नदियों को बचाने का कोई रास्ता निकाला जाएगा। उन्होंने मध्यप्रदेश के राइट टू वाटर की बात करते हुए कहा कि ये कार्यक्रम अच्छा है लेकिन बेहतर जल नियोजन के साथ ही इसे पर्यावरण के लिहाज से अच्छा बनाया जा सकता है। उत्तराखंड से आए पर्यावरण कार्यकर्ता विमल भाई ने बताया कि इस कार्यक्रम के अंत में विशेषज्ञ मिलकर नीति निर्माताओं तक कुछ सुझाव भी पहुंचाने की कोशिश करेंगे ताकि नदियों को बचाया जा सके। जबलपुर से आए सामाजिक कार्यकर्ता राजकुमार सिन्हा ने कार्यक्रम में आने वाले अतिथियों की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि चर्चा में जन वैज्ञानिक सौम्य दत्ता, पूर्व प्रशानिक अधिकारी शरद चंद्र बेहार, नदी विशेषज्ञ और अर्थशास्त्री डॉ भरत झुनझुनवाला, पर्यावरणविद सुभाष पांडे, यमुना जीए अभियान के मनोज मिश्रा, पर्यावरण शास्त्री प्रफुल्ल सामंत्रा, देबादित्या सिन्हा; पर्यावरण शास्त्री, समाजसेवी सुनीति, पर्यावरण विशेषज्ञ रोहित प्रजापति प्रदीप चटर्जी व शोमेन दा, पूर्व सांसद मीनाक्षी नटराजन, जल विशेषज्ञ विवेकानंद माथने जैसे विशेषज्ञ शामिल होंगे।

Utilization of Waste : A Success Story in East Bokaro Coalfields

Dr.Manoj Kumar,
Mgr(M), CCL

Coal mining is the process of extracting coal from below earth crust. It is the prime source of energy and is valued for its energy content. Different activity involved in mining are – clearing of land, deforestation – change in land use, Over burden removal – change in land use, coal extraction, preparation, its transportation, backfilling, technical reclamation, biological reclamation.

Waste Management : Mining industries generate a large amount of waste in the process of extraction, which is a great threat to the environment. Coal companies carries out regular study in accordance with the application of latest technology in order to create sustainable growth for the surroundings. Once the coal has been extracted, various kinds of wastes such as solid waste, mine water, process waste, suspended air particulate matter, instrumental waste, burnt oil and oil spills, tailings, sludge etc are left behind and have to be neutralized or dumped in secure enclosures for minimal impact on environment. Overburden Material: Waste for Coal mining Activities to its gainful utilization :The rocky part are overburden and are waste for the coal mining activities. These material are being utilized as in creating :External and internal OB Dump.

Overburden for reclamation of mine voids : Quantity of overburden depend on stripping ratio, which is defined as the volume of overburden (OB) removed over the coal production. As per Ministry of Environment, Forest and Climate Change (MoEFCC), Government of India, it is mandatory to reclaim the land which is to be mined out. MoEFCC while issuing EC & FC is stipulating various conditions. These conditions are related to concurrent reclamation, which is possible only by using OB of the mine. In the Bermo coalfields itself 1724 Ha of mined out area have been reclaimed by using overburden of which 52 Ha by fly ash & OB both. These OB dumps have been reclaimed biologically by 2731575 numbers of plants.

Overburden: Aesthetic beauty :Use of overburden by storing the overburden outside mine often termed as external overburden dump. These overburden dumps are devoid of clay. Scientific studies, principles and approaches used to select suitable species of plants. Laying of seed balls are being practiced over some of the dumps. Seeds of native species collected during various season which are dried and stored at a proper place. Seed balls are made using seeds inserted into the soil ball containing manure. Thrown on OB dumps & its slope. This will not only avoid erosion but also will impart aesthetic beautify of the region. Thus overburden the waste of mining activities can be used to increase aesthetic beauty of the surrounding.

Overburden as habitat of micro& Macro Organism: OB, the waste are utilized for recreating the habitat of micro &micro organismwhich has been altered or lost due to different mining activities.

Overburden for eco restoration:OB are also used for eco restoration of the area.

Overburden for Leisure Park:At various places, the mine out area have utilized OB - the waste of mining process in developing vatika and Leisure Park for the society.

Use of fly ash for filling up mine voids :Fly ash is a coal combustion residue of thermal power plants has been regarded as a problematic solid waste all over the world. From the unpublished sources the quantity of fly ash the waste of thermal power plants. Fig 1 depicts the volumetric use of fly ash for Bokaro Thermal power plant (BTPS), Chandrapura Thermal Power Plants (CTPS) and DLF at seven different locations of one of the major coal producing company of Jharkhand.

DLF CTPS BTPS

Utilization of Fly Ash – the waste of power plant as gainful utilization in coalmine voids: Physical property of fly ash like its fineness, free flowing powder, moderately abrasitivity, highly Fluidisibility, hygroscopicivity, non toxicity, non Corrosively, no fire hazard have been utilized as filling of the mine voids created due to opencast coal mining in bermo and other coalfields. The coalfields in turn have partially complied the MoEFCC circular dtd. 3.11.19.

Use of Fly Ash for Safety Purpose :Use of fly ash in mine voids at different opencast coal mines of Bermo coal coalfield situated in Bokaro district of Jharkhand is one of the success story. Some of the coal mine voids of Bermo coalfields are very old and have mix type of working. Open pit were mined over the standing pillars developed by underground methods. Reserves have been exhausted and the mine closure activities are in progress. Due to lagging in the activity of the mine closure and fire have broken at several locations on different occasions. Availability of sand and other non carbonaceous material is scarce in the region and fly ash from two power stations are readily available near to these mines. Physical property of fly ash of no fire hazard in nature helped filling of fly ash with the affected area and resulted into a success.

Use of fly ash as reclamation material :Most of the thermal power plants in the state are located near the open cast coal mines, the internal and external dumps of which can be economically used for disposal of the fly ash. Apart from general method of OB reclamation, biological reclamation (Fig 3) by using fly ash and cow-dung/ manure in pit-spracticed at Bermo coalfields is a showcase example. Using fly ash and OB in the mine voids has been successfully used as an important process in reclamation of mined out areas. It has also facilitated space for more generation of power by Chandrapura Thermal Power Station , Bokaro Thermal Power Station and captive power house at Kathara and Rajrappa. Fly-ash contains number of important organic and inorganic chemical components which are essential for plant growth. Thus the overburden waste dumped soil were reclaimed biologically by adding fly-ash along with manure.

Thus Bermo coalfields have been used as sink for 74.32 lakh cubic meter of waste of power houses located nearby have saved around 52 ha of private/ government/ forest /agricultural land for might have been used for disposal of ash. Amount of fly ash were 29.57 lakhs cubic meter from 2014-2018 (Fig 4) there by saving 20.7 ha of land. Mine void filling using fly ash have not only helped in reducing huge land requirement, but also help in creating vegetation cover and reducing carbon footprint in the tune of 9300 t-CO2e.(fig 5) Further this has been reduced to 3700 t CO2e for the period from 2014-18. There is change in soil organic carbon stock from 209-568 t CO2eon cumulative basis and 83-226568 t CO2e for the period from 2014-2018. This has also helped in increasing in biological activities in addition to above the area leading to increase in organic content of the soil, enhancement of flora and fauna and overall ecological restitution of the area, improving the biodiversity ofthe area.

Conclusion

It is the statutory obligation and ones commitment to use waste as wealth. The waste product of thermal power stations, have been proved as a valuable resource material by the different efforts made at different mines of Bermo Coalfields. About 52 Ha of forest land have been saved by the commitments of coal management and saving about 9300 t-CO2e being emitted to atmosphere by their efforts. The coal management have saved turn 3700 t CO2e for the period from 2014-18. The expected change in soil organic carbon stock from 209-568 t CO2e on cumulative basis have denied to be liberated in the Bermo coalfields. In addition to it this coalfield has created negative GHG emission through its reclamation efforts to the tune of 17826.5t-CO2e. 1672 ha of mined out area has been reclaimed by using OB-the waste of mine and 52 ha reclaimed using fly Ash- the waste of power house .Coalfield have witnessed the success story of using their internal waste & Waste of power plants to wealth of the coalfields. Several efforts like utilizing OB- the waste to improving aesthetic beauty, generating habitat of micro & macro organism, establishing eco restoration and creating leisure park in other coalfields have been covered. Fly ash – the waste of power house has been utilized for different efforts in increasing the biodiversity of the region.

ऑल वेदर रोड पर बन रहे हैं नए लैंड स्लाइड जोन

उत्तराखंड में बदरीनाथ हाईवे पर नन्दप्रयाग के पास 6 फरवरी को एक बार फिर बड़ा लैंड स्लाइड (भूस्खलन) हो गया था। चार धाम यात्रा मार्ग परियोजना यानी ऑल वेदर रोड के लिए हो रही कटिंग के कारण उभरे नये स्लाइडिंग जोन में पहाड़ी से भारी मात्रा में आये मलबे से पांच दुकानें, एक ट्रक और एक कार दब गये। हालांकि, समय रहते मौके से भाग जाने के कारण घटना के समय वहां मौजूद लोगों की जानें बच गई। 2018 में ऑल वेदर रोड पर काम शुरू किया गया था। यह प्रोजेक्ट राज्य के चारों तीर्थस्थलों तक सड़कों का चौड़ीकरण करने के लिए शुरू किया गया है। शुरू होने के बाद से अब तक इस सड़क पर दर्जनों की संख्या में भूस्खलन की घटनाएं हो चुकी हैं।

सब्जी से ज्यादा अच्छा क्यों लगता है प्रोसेस्ड फूड?

मुरलीधर

खाने के लिए आलू के चिप्स और फल में से चुनना हो तो लोग चिप्स चुन लेते हैं. रिसर्च के मुताबिक इसकी वजह चिप्स का स्वाद नहीं है. तो फिर इसकी वजह क्या है ?आलू के चिप्स के एक पैकेट में करीब 1,200 कैलोरी होती है जो लगभग 30 आड़ुओं के बराबर होती है. हम चिप्स का एक पैकेट तो आराम से खा लेते हैं लेकिन उतनी ही ऊर्जा लिए 30 आड़ुओं को नहीं खा पाते. हाल ही में सेल मेटाबॉलिज्म में छपी एक रिसर्च के मुताबिक अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों या सस्ते ओद्योगिक प्रोसेस्ड ऊर्जा स्रोत और पोषक तत्वों का सेवन करने से वजन तेजी से बढ़ता है. अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड चिप्स, कैंडी और कोल्ड ड्रिंक्स जैसे जंक फूड का एक फैंसी नाम है. आड़ू और आलू के चिप्स की तुलना में चिप्स ज्यादा खाने का कारण चिप्स का बेहतर स्वाद है, रिसर्च के मुताबिक ऐसा मानना ठीक नहीं है. वैज्ञानिकों के मुताबिक जरूरत से ज्यादा खाने का स्वाद से लेना-देना नहीं है.

क्या था प्रयोग?

चिप्स और कैंडी खाने को स्वास्थ्य समस्याओं से जोड़ कर देखा जाता है लेकिन वैज्ञानिकों ने एक निश्चित सीमा में इनका सेवन करने पर ऐसा कोई संबंध नहीं पाया. अमेरिका के राष्ट्रीय स्वास्थ्य संस्थान में किए गए प्रयोग में 20 स्वस्थ लोगों पर एक परीक्षण किया गया. चार सप्ताह तक उन्हें एक समय एक अल्ट्रा प्रोसेस्ड खाना और एक समय पर अनप्रोसेस्ड खाना दिया गया. अनप्रोसेस्ड खाना भुने हुए मीट, जौ और सलाद से बना था जबकि प्रोसेस्ड फूड में हैमबर्गर, फ्रेंच फ्राइज, मैकरोनी और चीज शामिल था. दोनों कैलोरी, शुगर और फैट में समान थे. इन लोगों को दिन में तीन मील खाने की अनुमति थी और इसमें वे जितना खाना चाहें, उतना ज्यादा खा सकते थे।रिसर्चरों ने पाया कि अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड का भोजन करने वाले लोगों ने दूसरे लोगों की तुलना में 500 कैलोरी ज्यादा खाना खाया. साथ ही दो सप्ताह के समय में ही एक किलो वजन बढ़ा लिया. अनप्रोसेस्ड खाना खाने वाले लोगों का लगभग एक किलो वजन कम हुआ. इन लोगों ने अनप्रोसेस्ड खाने को अल्ट्रा प्रोसेस्ड खाने की तुलना में पेट भरने वाला और संतुष्टि देने वाला पाया. उन्होंने अनप्रोसेस्ड मील के समय ज्यादा खाना खाया. शोध के मुताबिक अल्ट्रा प्रोसेस्ड खाना खाने वाले लोगों ने तेजी से खाना खाया. इसलिए उनकी खाने की दर ज्यादा रही।

चेतावनियां

हाइली प्रोसेस्ड फूड सबसे पहले आद्योगिक क्रांति के दौरान आए थे क्योंकि ये सस्ते हुआ करते थे. अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड कम महंगे होते हैं और बनाने में भी आसान होते हैं. रिसर्च के मुताबिक एक सप्ताह के अल्ट्रा प्रोसेस्ड खाने की कीमत करीब 150 डॉलर और हाइपर प्रोसेस्ड खाने की कीमत 100 डॉलर होती है. रिसर्च के मुताबिक पश्चिमी देशों में लोग ये जानते हैं कि प्रोसेस्ड खाने से नुकसान हो सकता है लेकिन कम कीमत और सहूलियत के चलते वे प्रोसेस्ड खाने और अनप्रोसेस्ड खाने में प्रोसेस्ड खाने को चुन लेते हैं।

मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने विधानसभा सत्र के शुभारंभ अवसर पर नए विधानसभा परिसर में विधानसभा अध्यक्ष रबींद्र नाथ महतो को फूलों का गुलदस्ता भेंट कर शुभकामनाएं दीं।

राजपुताना एकता मंच का होली मिलन समारोह 8 को

रांची: 28फरवरी को युवा राजपुताना एकता मंच के तत्वावधान में धुम-धाम से होली मिलन समारोह के आयोजन के लिये बैठक आर.बी. सिंह के आवास सेक्टर-5 धुर्वा में सम्पन्न हुई। बैठक में निर्णय लिया गया कि 08.03.2020 को दोपहर 12 बजे दिन में ईटकी रोड, मेजर कोठी स्थित मौर्या हिल रिसोर्ट में धुम-धाम से होली मिलन समारोह का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर समाज के वरिष्ट बंधुगण के मौजुदगी में होली मिलन समारोह निमंत्रण कार्ड का विमोचन हुआ। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य आयोजन प्रभारी धर्मेन्द्र कुमार सिंह, डॉ मुकेश कुमार, कुवंर श्रीराम सिंह, शैलेश सिंह, सुनील सिंह, राजेश सिंह, सुमित सिंह, अशोक सिंह, आर.बी. सिंह, आर.पी. सिंह, अरविंद सिंह, सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

झारखंड सरकार के मंत्री श्री रामेश्वर उरांव ने भुवनेश्वर में पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की 24वीं बैठक में भाग लिया

झारखंड को सिर्फ खनिज संपदा के लिए ही नहीं बल्कि प्राकृतिक सुंदरता के लिए भी पहचाना जाए

संवददाता

रांची : 29 फरवरी को रजरप्पा महोत्सव के उद्घाटन अवसर पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि झारखंड सिर्फ खनिज संपदा के लिए ही नहीं बल्कि प्राकृतिक सुंदरता के लिए भी पहचाना जाए हमें ऐसी छवि बनानी है। उन्होंने कहा कि झारखंड की संस्कृति और परंपरा काफी पुरानी और लोकप्रिय है। हेमन्त सोरेन ने कहा कि यहां बोलना और चलना ही संगीत है। झारखंड के लोग अपनी संस्कृति और परंपरा को अपने सीने से लगाएं रहते हैं। राज्यवासियों ने यहां की सभ्यता और संस्कृति को अक्षुण्ण रखने के लिए पूरी समर्पण और निष्ठा को बनाए रखा है। हमारे इस राज्य में कई ऐसी तीर्थ स्थल और पर्यटन स्थल हैं जिसकी जानकारी हमें देश में जन-जन तक पहुंचानी है। राज्य सरकार प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेगी ।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इस दो दिवसीय ऐतिहासिक रजरप्पा महोत्सव कार्यक्रम का पूरा लाभ राज्य को मिले हमें यह प्रयत्न करना चाहिए। यह महोत्सव प्रचार-प्रसार का माध्यम बन दूर तक गूंजेगी। विश्व के मानचित्र में रजरप्पा एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल बने यह सरकार की सोच है। इसके लिए राज्य सरकार प्रतिबद्धता के साथ कार्य करेगी। हमारी सरकार रजरप्पा को एक प्रसिद्ध पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने का कार्य करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार रजरप्पा को एक प्रसिद्ध पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने का कार्य करेगी। रजरप्पा के साथ-साथ आसपास के क्षेत्रों को भी विकसित कर देश-विदेश तक इसका प्रचार-प्रसार किया जाए यह सुनिश्चित करना है। रजरप्पा को देश-विदेश के मानचित्र में स्थापित करने की आवश्यकता है।

हेमन्त सोरेन ने कहा कि हमारी सरकार राज्य के आंतरिक शक्तियों को मजबूत करेगी। यह आंतरिक शक्ति चाहे जिस रूप में हो पर्यटन का क्षेत्र हो, नौजवान हो, प्रकृति के अंदर जो भी चीजें झारखंड को कुदरत ने दी हैं उसे उभारना ही सरकार की प्राथमिकता है हम झारखंड के लोग दूसरों के बदौलत नहीं बल्कि अपनी मेहनत के बदौलत अपने हाथों से विकास की लंबी लकीर खींचेंगे। हमारे पास किसी भी चीज की कमी नहीं है हमारे नौजवान मेहनतकश और ईमानदार हैं, राज्य के युवाओं में हुनर और काबिलियत की कमी नहीं है। हमें राज्य के सभी ताकतों और सभी क्षमताओं को एक सूत्र में बांधने की आवश्यकता है।

बहुत जल्द ही राज्य में चीजें बदलेंगी जो दिखेगा भी और महसूस भी होगा

मां छिन्नमस्तिका का आशीर्वाद और कृपा देश के कोने-कोने से पहुंचे श्रद्धालुओं पर बनी रहती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि रामगढ़ मेरा गृह जिला भी है और जन्मभूमि भी है। झारखंड के लोग रजरप्पा को न जाने ऐसा हो नहीं सकता है। श्रद्धालुओं की आस्था से जुड़ी सिद्धपीठ रजरप्पा स्थित मां छिन्नमस्तिका का मंदिर पूरे देश में प्राचीन काल से ही अहम स्थान रखता है। मां छिन्नमस्तिका का आशीर्वाद और कृपा देश के कोने-कोने से पहुंचे श्रद्धालुओं पर बनी रहती है।

मां छिन्नमस्तिका से राज्य वासियों के सुख समृद्धि की कामना की

मुख्यमंत्री ने कहा कि मैं भी आज सिद्धपीठ रजरप्पा मंदिर स्थित मां छिन्नमस्तिका पहुंचकर पूजा अर्चना कर झारखंडवासियों की सुख समृद्धि और प्रगति के लिए मां से आराधना की है। मां से आशीर्वाद मांगा है कि राज्य में कोई भी भूखा ना रहे, अशिक्षित ना रहे, शिक्षा से वंचित ना रहे, दवा से वंचित ना रहे, हर हाथ में काम हो हर हाथ में रोजगार हो। सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर लोग आगे बढ़े, राज्य की जनता के चेहरे में मुस्कान हो ।

झारखंडवासियों में है नेचुरल टैलेंट: मुख्य सचिव

संवाददता

- मुख्य सचिव ने किया दो दिवसीय चित्रकला प्रदर्शनी का उद्घाटन
- कॉफी टेबुल बुक 'ट्राइबल एंड फोक पेंटिंग ऑफ इंडिया' का विमोचन
- मुख्य सचिव ने कहा हर वर्ष करें चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन

राची: मुख्य सचिव डॉ. डीके तिवारी ने कहा है कि झारखंड के लोग मानसिक रूप से काफी समृद्ध हैं। यह उनकी जीवनशैली से लेकर संस्कृति तक में झलकती है। उनकी समृद्ध कलात्मक विरासत की दाद सभी देते हैं। बस जरूरत है उनकी कलात्मक विरासत को कलात्मक विकास का एक बड़ा कैनवास देने की। चित्रकला प्रदर्शनी का मंच झारखंडवासियों की स्वाभाविक योग्यता को और निखारेगा। उन्होंने आयोजनकर्ताओं से राज्य में प्रतिवर्ष चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन करने पर बल दिया। मुख्य सचिव शनिवार को रांची के आड्रे हाउस में आयोजित चित्रकला प्रदर्शनी के उद्घाटन और कॉफी टेबुल बुक 'ट्राइबल एंड फोक पेंटिंग ऑफ इंडिया' के विमोचन के अवसर पर बोल रहे थे।

मुख्य सचिव ने कहा कि झारखंड वासियों में नेचुरल टैलेंट है। संगीत और खेल के अलावा कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में भी यह नेचुरल टैलेंट झलकता है। उन्हें बस अपने कला कौशल के विकास के लिए उचित प्लेटफार्म भर देने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि सरकार भी इस दिशा में सुविचारित नीति बनाने की प्रक्रिया में है। इससे राज्य के कलात्मक विकास का नया आयाम जुड़ेगा। सरकार खेलकूद एवं कला-संस्कृति के क्षेत्र में राज्य का नाम रोशन करनेवालों को आर्थिक सबलता प्रदान करने की भी नीति पर काम कर रही है। इस क्षेत्र में राज्य काफी आगे बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि राज्य के कलाकार जिन चित्रों को बना रहे है वे आगे चलकर अमूल्य एवं ख्यातिवान हो जाएंगे। उन्होंने विश्व विख्यात चित्रकार पाब्लो पिकासो का उदाहरण देते हुए कहा कि एक समय उनकी पेंटिंग भी नकार दी गयी थी लेकिन एक वह भी समय आया जब उनकी पेंटिंग ने अंतर्राष्ट्रीय ख्याति बटोरी। मुख्य सचिव ने राज्यवासियों से आड्रे हाउस आकर चित्रकला प्रदर्शनी का लुत्फ उठाने की अपील करते हुए कहा कि यह आपको सिनेमा से ज्यादा आनंद देगा। इन चित्रों में झारखंड जीवंत हो गया है।

मौके पर कल्याण सचिव श्रीमती हिमानी पांडेय, डॉ. रामदयाल मुंडा शोध संस्थान के निदेशक डॉ. रणेंद्र कुमार समेत अन्य गणमान्य अतिथि मौजूद थे।

यह मेरी नहीं आपकी सरकार है: मुख्यमंत्री

रांची :सरकार की सारी योजनाओं पर अपका अधिकार है ' इन योजनाओं का लाभ हर किसी को मिलना चाहिए ' इसके लिए जरूरी है कि आप सरकार के सहयोगी बने ' सरकार के साथ कदम से कदम मिलाकर चलें ' मुख्यमंत्री श्री हेमन्त सोरेन ने गोड्डा जिले के सुंदरपहाड़ी प्रखंड के बड़ा कल्हाजोर गांव में बैजल बाबा की जयंती पर आयोजित मेला के उदघाटन समारोह में मौजूद हजारों लोगों को बतौर मुख्य रूप संबोधित करते हुए कही '. उन्होंने कहा कि अभी तो शुरुआत है ' आनेवाले दिनों में सरकार अपने विकास कार्यों की बदौलत झारखंड की तस्वीर और तकदीर बनाने का काम करेगी । मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार किसी भी कीमत पर भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं करेगी ' हमारी हर किसी पर नजर है ' इसकी शुरुआत हो चुकी है ' जो भी पदाधिकारी कर्मचारी भ्रटाचार में लिप्त पाए जाएंगे उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी ।

ओबीसी मोर्चा ,रांची ने दीपक प्रकाश को सम्मानित किया

रांची संवाददाता : 29फरवरी को भारतीय जनता पार्टी, ओबीसी मोर्चा राँची महानगर के मिडिया प्रभारी, शिव किशोर शर्मा के नेतृत्व में भाजपा झारखण्ड प्रदेश के नव नियुक्त प्रदेश अध्यक्ष दीपक प्रकाश को उनके आवास हरमु हाउसिंग कॉलोनी में मिलकर उन्हे पगड़ी, पुष्पगुच्छ, एवं शॉल भेंटकर सम्मानित किया गया। सम्मानित करने वालों में भाजपा आईटी सेल ओबीसी मोर्चा के संयोजक डॉ अनुज कुमार पटेल, नीलम शर्मा, देवनन्दन साहु, भाजपा सुखदेवनगर मंडल युवा मोर्चा अध्यक्ष पंकज चैधरी, राजा गुप्ता, मनु कुमार चैधरी, भाजपा ओबीसी मोर्चा रॉची ग्रामीण मंत्री अरूण प्रसाद, सुनिल कुमार साहु, संतोष प्रसाद गुप्ता, मिथुन पोद्दार, महेश पंडित ने सम्मानित किया।

सीएमपीडीआइ में कोयला मंत्रालय की अध्यक्षता में स्टेकहोल्डर्स की परामर्श बैठक आयोजित

संवाददाता रांची: 25 फरवरी को सीएमपीडीआई, रांची में कोयला ब्लॉकों की निलामी के संबंध में श्रीमती विस्मिता तेज, संयुक्त सचिव, कोयला मंत्रालय की अध्यक्षता में स्टेकहोल्डर्स की परामर्श बैठक आयोजित की गयी। इस बैठक में सीएमपीडीआई के निदेशक (तकनीकी/पीएंडडी) ए0के0 राणा, झारखंड सरकार के डीएमजी अरूण कुमार, झारखंड चेम्बर ऑफ कॉमर्स के धीरज आजमानी, बंगाल स्पंज मैन्यूफैक्चिरिंग एंड माइनिंग लिमिटेड के सी0के0 सिंघानिया तथा झारखंड राज्य के प्रतिनिधियों के साथ-साथ लगभग 30 विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित थे। कोयला ब्लॉकों के लिए प्रस्तावित निलामी प्रक्रिया पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया तथा संभावित बिडरों खासकर झारखंड के बिडरों से राय ली गई।

80 कोयला ब्लॉकों, जो कोयला मंत्रालय द्वारा चिन्हित संभावित ब्लॉकों की सूची में शामिल है, में से 22 झारखंड राज्य में स्थित है। झारखंड के उद्यमियों द्वारा मुख्यत फॉरेस्ट डायवर्जन तथा परियोजना से प्रभावित व्यक्ति के पुनर्वास के लिए भूमि अधिग्रहण से संबंधित मुद्दों को भी उठाया गया।

रांची रेल मण्डल पर विशेष संरक्षा जागरूकता अभियान चलाया गया

संवाददाता रांची :रेल मंडल पर दिनांक 18.02.2020 से दिनांक 27.02.2020 तक विशेष संरक्षा जागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान के अंतर्गत मण्डल के विभिन्न स्टेशनो तथा मण्डल पर चलने वाली विभिन्न यात्री ट्रेनों में एवं समपार फाटको पर विशेष संरक्षा अभियान चलाकर यात्रियों को जागरूक किया गया।

जागरूकता अभियान में समपार फाटक पार करने के नियम, रेलवे पटरी में मोबाइल फोन या हेडफोन लगाकर नहीं चलने, ट्रेन में ज्वलनशील पदार्थ नहीं ले जाने, चलती ट्रेन में नहीं चढ़ने एवं उतरने, स्टेशन में गंदगी ना फैलाना, कूड़ेदान का प्रयोग करना, स्टेशन परिसर में धूम्रपान नहीं करना, आरपीएफ से सहायता के लिए 182 पर फोन कर सहायता प्राप्त करना, पायदान या गेट में खड़ा होकर सफर नहीं करने, बेवजह भीड़ न लगाने, अनजान व्यक्ति से किसी भी तरह के खाद्य पदार्थ ग्रहण नहीं करने, बंद समपार फाटक के नीचे से फाटक ना पार करना , ट्रेन की छत पर ना चढ़ना, एवं अपना उचित टिकट खरीद कर ही यात्रा करने हेतु जानकारी दी गई तथा इस विषय से संबंधित पंपलेट भी वितरित किया गया ।

उपरोक्त संरक्षा जागरूकता अभियान को सफल बनाने में सिविल डिफेंस के जितेंद्र सिंह,सीमांचल बेहरा, राजू मरांडी, आरपीएफ से एएसआई श्रीमति सुशीला बड़ाईक, श्रीमति सुमन मींज, चंद्रिका कश्यप, मंडल सांस्कृतिक अकादमी से सीबी सिंह, राजू रंजन, खेद राम मांझी, बनेश्वर गोरेंग तथा नागरिक सुरक्षा से एसपी राव का विशेष योगदान रहा

नि:शुल्क एचिवर्स क्लासेस कम्प्यूटर ट्रेनिंग सेन्टर का उद्घाटन

संवाददाता रांची :दिनाक 29.02.2020 को एचिवर्स क्लासेस कम्प्यूटर ट्रेनिंग सेन्टर नारायणी स्वीटस के निकट,कांठीटांड, रातु, राँची का शुभ उद्धघाटन मुख्य अतिथि मिस इंडिया युनिवर्स परी पास्वान एवं विशिष्ट अतिथि छात्र क्लब ग्रुप के सरंक्षक नीलम शर्मा, रविन्द्र कौर, प्रिया कुमारी गुप्ता, संस्था के निदेशक सचिदानन्द विश्वकर्मा, वरिष्ठ भाजपा नेता सोमनाथ पाण्डे ने फीता काटकर एवं नारियल फोड़कर किया। कार्तिक विश्वकर्मा ने कहा छात्र क्लब ग्रुप द्वारा संचालित इस ट्रेनिंग सेन्टर का मुख्यउद्धेश्य ग्रामीण क्षेत्र के विधार्थियों को कम्प्यूटर के क्षेत्र में निपुण करना है। इस कम्प्युटर ट्रेनिंग सेन्टर में 8वी से 12वी तक के विधार्थियों को रेलवें, बैंकिंग,कंपटिसन ,स्पोकेन इंगलिस की भी तैयारी कुशल एवं अनुभवी शिक्षकों द्वारा कराई जायेगी।

उद्घाटन समारोह को सफल बनाने में सेंटर के संचालिका शोभा कुमारी, दयानन्द विश्वकर्मा, कार्तिक विश्वकर्मा, शिवकुमार विश्वकर्मा, पुजा कुमारी,उपेन्द्र कुमार, किरण कुमारी, पुष्पा कुमार, पिन्की कुमारी, आमना देवी,आयुष कुमार, पार्वती कुमारी,संदीप विश्वकर्मा, सोमा डे ने सराहनीय भुमिका निभाई।

भारतीय विप्स, सीएमपीडीआई द्वारा कार्यशाला का आयोजन

रांची 28 फरवरी: परियोजना स्वावलम्बी के तहत सीएसआर टीम के सहयोग से विप्स, सीएमपीडीआई के तत्वावधान में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन कस्तूरी महिला सभा की अध्यक्षा श्रीमती मीता सरन ने किया। इस मौके पर क्षेत्रीय संस्थान-3, रांची के क्षेत्रीय निदेशक, मानव संसाधन विभाग के मुख्य प्रबंधक (कार्मिक) सहित विप्स की सदस्या उपस्थित थीं।श्रीमती सरन ने समाज में महिलाओं के अस्तित्व के लिए उनकी प्रगति एवं महिलाओं के स्वरोजगार और इसकी आवश्यकता पर बल दिया। इस कार्यशाला का आयोजन का उद्देश्य हातमा बस्ती और कांके रोड के आसपास के क्षेत्रों की वंचित महिलाओं को कौशल विकास तथा रोजगार प्रदान करना है। इस कार्यक्रम के तहत उषा इंटरनेशनल लिमिटेड, पटना से आए मास्टर ट्रेनर की मदद से महिलाओं को सिलाई का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। पिछले सत्र के 10 सफल प्रशिक्षार्थियों के बीच प्रमाण-पत्र वितरित किए गए। इस परियोजना के तहत नए सत्र में प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए 15 महिलाओं का चयन किया गया है। प्रशिक्षण समाप्त होने के पश्चात इन प्रशिक्षित महिलाओं को गोंदवाना प्राइमरी स्कूल एवं बिरसा उच्च विद्यालय के छात्रों के लिए यूनीफार्म सिलाई का काम तथा सफलतापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करने का प्रमाण-पत्र दिया जाएगा। इसके द्वारा उन्हें रोजगार प्राप्त करना सुनिश्चित हो जाएगा

कोल इंडिया अंतर कम्पनी वॉलीबाल टूर्नामेंट 2019-20 का शुभारंभ

संवाददाता रांची :29 फरवरी को सीएमपीडीआई के खेल मैदान में तीन-दिवसीय कोल इंडिया अंतर कम्पनी वॉलीबाल प्रतियोगिता 2019-20 का आयोजन किया गया है। सीएमपीडीआई के अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक एस0 शरण ने आज इस टूर्नामेंट का उद्घाटन किया। इस मौके पर कस्तूरी महिला सभा की अध्यक्षा श्रीमती मीता शरण एवं सीएमपीडीआई के निदेशक (तकनीकी/ईएस) के0के0 मिश्रा, क्षेत्रीय संस्थान-3, रांची के क्षेत्रीय निदेशक मनोज कुमार, श्रमिक प्रतिनिधि एवं जेसीसी सदस्य, सीएमओएआई के प्रतिनिधि, महाप्रबंधक /विभागाध्यक्ष, अधिकारी एवं कर्मचारीगण के अलावा बड़ी संख्या में खेल प्रेमी उपस्थित थे।

उद्घाटन सत्र में इस टूर्नामेंट के पहले लीग मैच में महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड (एमसीएल) का मुकाबला सिंगरैनी कोलियरी कम्पनी लिमिटेड (एससीसीएल) के बीच हुआ जिसमें एमसीएल, सम्बलपुर ने एससीसीएल,कोठागुद्दम को सीधे सेटों में 25-23, 25-17 से पराजित किया। वहीं दूसरे लीग मैच में वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (डब्ल्यूसीएल) का मुकाबला मेजबान टीम सीएमपीडीआई, रांची के बीच हुआ जिसमें डब्ल्यूसीएल, नागपुर ने सीएमपीडीआई, रांची को 25-16, 25-15 से मात दी जबकि तीसरे लीग मैच में साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (एसईसीएल) का मुकाबला सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (रांची) के बीच हुआ जिसमें एसईसीएल, बिलासपुर ने सीसीएल, रांची को सीधे सेटों में 25-18, 25-21 से हराकर अपनी जीत हासिल की।

इस टूर्नामेंट में मेजबान कम्पनी सीएमपीडीआई (रांची) सहित, ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (संकटोरिया), भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (धनबाद), सेन्ट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (रांची), वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (नागपुर), साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (बिलासपुर), नॉर्दर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (सिंगरौली), महानदी कोलफील्ड्स लिमिटेड (सम्बलपुर), एनईसी-(असम) एवं सिंगरैनी कोलियरीज कम्पनी लिमिटेड (कोठागुद्दम) के प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं।

गया-राजगीर में 28 सौ करोड़ के गंगाजल से क्या लाभ होगा ?

एजेंसियां :बिहार के गया और नालंदा जिले के जलसंकट के समाधान के लिए बिहार सरकार पाइपलाइन से गंगा नदी का पानी मोकामा के मराची के पास से राजगीर होते हुए गया तक लाना चाहती है। इसके पहले चरण का खर्च 2836 करोड़ रुपए बताया जा रहा है। इस योजना को कैबिनेट की मंजूरी और पथनिर्माण विभाग की स्वीकृति मिल चुकी है और बहुत जल्द इस पर काम शुरू होने वाला है। मगर जहां विशेषज्ञ इस योजना को खर्चीला और अवैज्ञानिक बता रहे हैं, वहीं मराची के लोग उनके यहां से पानी को ले जाने का विरोध कर रहे हैं।

क्या है योजना

जल संकट से प्रभावित बिहार के गया और नालंदा जिले को गंगा नदी का पानी उपलब्ध कराने की यह योजना पिछले साल के दिसंबर महीने में बिहार के कैबिनेट से पास हुई थी, इस वर्ष फरवरी माह के तीसरे सप्ताह में इसे राज्य के पथ निर्माण विभाग की स्वीकृति भी मिल गयी। इस योजना के तहत पटना जिले के मोकामा के पास मराची के निकट से गंगा नदी का पानी सरमेरा, बरबीघा होते हुए गिरियक ले जाया जाएगा और वहां से राजगीर के घोड़ाकटोरा झील में पानी को गिराया जाएगा। फिर वहां से पानी को गया जिले के फल्गू नदी तक ले जाया जायेगा। इसके लिए सड़क के किनारे 190 किमी लंबी पाइपलाइन बिछायी जाएगी। चूंकि गंगा नदी की सतह नीची है और राजगीर पहाड़ी इलाका है, इसलिए पानी खुद बहाव के साथ नहीं पहुंचेगा, इसके लिए मोटर पंप लगाए जाएंगे।

महंगी और अवैज्ञानिक परियोजना

नालंदा के एक शोधार्थी मनीष कुमार ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को पत्र लिख कर कहा है कि यह योजना काफी खर्चीली है। मोटर पंप के परिचालन की वजह से इसके संचालन में भी लगातार खर्च होगा। इसके बदले अगर सोन नदी का पानी गया को उपलब्ध कराया जाए तो वह काम बहुत कम खर्च में हो सकता है। वे कहते हैं, सोन नदी की पूर्वी नहर का किनारा गया शहर से सिर्फ 15 किमी दूर है। गया से 40 किमी दूर गोह में भी सोन नहर की शाखा है। इसे आगे

बढ़ाकर सोन का पानी गया तक लाया जा सकता है। इसमें खर्च बहुत कम होगा और पानी गया तक लाने के लिए बिजली वाला पंप भी नहीं चलाना पड़ेगा। वे मोरहर-सोरहर के बराज और पूर्वी सोन नहर से पानी लेने का भी सुझाव देते हैं। वे कहते हैं, इस परियोजना को शुरू करने से पहले इसके खर्च का आकलन और प्रभाव का आकलन जरूर करवाना चाहिए। मोकामा के मराची में जहां से गंगा का पानी राजगीर और गया जाना है, वहां के स्थानीय लोग इस परियोजना का विरोध कर रहे हैं। स्थानीय किसान प्रणव शेखर शाही कहते हैं कि खुद गंगा नदी में बारिश के मौसम को छोड़ कर किसी मौसम में जहाज के चलने लायक पानी भी नहीं होता। ऐसे में अगर यहां से पानी ले जाया गया तो यहां का जलस्तर नीचे गिरेगा और हमारे इलाके में खेती से लेकर कई तरह के संकट उत्पन्न होंगे। स्थानीय किसान नेता अरविंद कुमार सिंह कहते हैं, गया के फल्गू और पुनपुन नदी का पानी हर साल बहकर हमारे टाल इलाके में आता है। अगर सरकार चाहे तो उस पानी को चेक डैम बनाकर रोक सकती है। उससे गया और राजगीर दोनों का काम चल सकता है। उसे यहां से पानी ले जाने की क्या जरूरत।

गया में जल संरक्षण के क्षेत्र में काम करने वाली संस्था मगध जल जमात के प्रमुख रवींद्र पाठक जी कहते हैं कि ऐसी योजना एक बार 2008 में भी चर्चा में आई थी, तब हमलोगों ने उसका विरोध किया था और योजना वापस हो गयी थी। सोन नदी के जल को गया लाने की बात से वे भी सहमत दिखते हैं, वे कहते हैं कि हाथीदह तक पहुंचते-पहुंचते गंगा का जल इतना अशुद्ध हो जाता है कि अगर उसे लाया गया तो गया में प्रदूषण ही फैलेगा।वे कहते हैं, फल्गू नदी रेत से भरी है, इसमें पानी डालने से पानी के अंदर रिस जाने की अधिक संभावना है। सबसे बड़ी बात यह कि बांग्ला देश के साथ फरक्का बराज के समझौते की वजह से भी गंगा का पानी कहीं और भेजना आसान नहीं होगा।

पांच रेल कर्मचारी सेवानिवृत्त हुये, सभी राशियों का भुगतान किया

संवाददाता रांची : दिनांक 28/02/2020 को राँची रेल मंडल पर कार्यरत विविध विभाग के कुल 05 रेल कर्मचारी सेवानिवृत्त हुए , तथा उन्हें सेवानिवृत्ति के पश्चात मिलने वाली सभी राशि का भुगतान किया गया। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक (परिचालन) एम एम पंडित ने सेवानिवृत्त रेल कर्मचारियों को शुभकामनाएं दी तथा सेवानिवृत्ति के पश्चात सुखद एवं स्वस्थ जीवन के लिए कामना की। सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के नाम विमल तिर्की परिचालन विभाग, श्री बसंत किंडो परिचालन विभाग, श्री भरीगुराम महतो इंजीनियरिंग विभाग, धनंजय बाउरी यांत्रिक विभाग, तथा प्रभाकर काइबरता यांत्रिक विभाग`

इस अवसर पर वरिष्ठ मण्डल कार्मिक अधिकारी माणिक शंकर , वरिष्ठ मण्डल यांत्रिक अभियंता सिधार्थ प्रधान, सहायक कार्मिक अधिकारी ऋषभ सिन्हा, सहायक कार्मिक अधिकारी मोहम्मद इबरार, सहायक परिचालन प्रबन्धक विभूति नारायण शर्मा,उपस्थित थे।

फोटो न्यूज

रांची के पर्यावरण प्रेमियों के संगठन टीम ग्रीन की अनूठी पहल। इसके सदस्य शादी विवाह या खुशियों के मौकों पर भेंट में पौधे बांटते हैं।

राष्ट्रपति कर आवेक हमरे मन वास्ते बड़ा ही गुमान कर बात है।

बलदेव शर्मा

गुमला बिशुनपुर:हमरे कर राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद विकास भारती बिशुनपुर आय रहंय। राष्ट्रपति कर गुमला जिला में आवेक हमरे मन वास्ते बड़ा ही गुमान कर बात है। आईज तक गुमला जिला में कोई राष्ट्रपति नी आय रहंय।

बिशनपुर नक्सल प्रभावित इलाका मानल जायला। पहाड़ और जंगल से घिरल रहेक कर कारण दूर दराज कर गांव तक पहुंचेकले बड़ा मुश्किल आउर कठिन रहे । कहीं-कहीं सड़क बनल रहे मुदा नक्सली और उग्रवादी, नदी - नाला में पुल बनाएक मना कर देई रहंय । बरसाईत कर दिन आवाजाही बड़ा मुश्किल रहे। स्कूल घर मनकर भी हालइत बहुते खराब रहे । काहे कि स्कूल कर नया घर बनाएक नई देवल जात रहे। नया घर बनल से पुलिस दल डेरा डाईल देत रहंय।एहे वास्ते नक्सली मन नया बिल्डिंग घर कर विरोध करत रहंय। उग्रवादी मनकर नाम लेवल से सब कर दिल और दिमाग में उथल-पुथल होई जात रहे। उसने कठिन समय में अशोक भगत विशुनपुर के अपने कर्मक्षेत्र बनाय के सेवा काम शुरू करले रहयं। काम करना उबेरा एतना कठिन रहे , कि बरनन करल जाय तो कोई विस्वास नी करबंय। काहे कि सेबेरा जंगल में फुस कर घर बनाय के रहेक वाला आदिम जनजाति परिवार कर सदस्य शहर कर अबदीन के देईख के भाईग जात रहंय। लेकिन अशोक भगत जी हार नी मानलयं। करीब सैंतीस बरीस लगातार मेहनईत करलंय। आज उनकर मेहनत रंग देखावथे। स्वास्थ , शिक्षा, रोजगार,धर्मान्तरण आउर भूखमरी कर मामला में सहरायक लेखे काम होलकर हय। गरीब , बेसहारा आउर अनाथ मनकर सहारा बईन के अशोक जी बाबा बईन गेलयं। अभावग्रस्त आबदीन मनकर बीच पहुंच आउर पकड़ बनाएक लागिन अपने भी कपड़ा कर त्याग करलंय। बीच में नक्सली मन भगत जी के तंग करेंक कर भी कोशिश करलयं। मुद्दा अशोक जी कर लक्ष्य तो बड़ा रहे। से लागिन उनकर हिम्मत नहीं डोललक। परिणाम आईज राउर सामने आहे। राईज आउर देश कर बड़ा से बड़ा हस्ति विशुनपुर आय के विकास भारती कर काम के देखलयं।नाम आउर काम के देईख भारत सरकार पद्मश्री कर उपधि से अलंकृत करलक। तो विकास भारती कर संगे पूरा जिला कर सीना चाकर होई गेलक।

मुद्दा अशोक जी कर मंजिल तो आउर आगे रहे। अंततः देश कर पहिला नागरिक राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद विकास भारती आलयं। तब अशोक जी कर मन तरलक।

कोविंद जी कर गुमला आवेक कर दूसरा बड़ा कारण इहां आदिम जनजाति आउर जनजाति समाज के बीच में अशोक भगत जैसन अबदीन संस्था बनाय के उनकर हित में काम करेक लागल हयं। राष्ट्रपति विशुनपुर इलाका में जनजातिय समाज कर संस्कृति उनकर परंपरा आउर देशज कला के बचाएक कर अलावा वन पर्यावरण के रक्षा , शिक्षा दीक्षा , युवा पढ़ल लिखल लड़का लड़की के ट्रेनिंग देईके रोजगार से जोईड के अपने गोड में खड़ा करेक कर काम के देखलंय। विशुनपुर में आदिम जनजाति परिवार कर अबदीन मन से भेंट मुलाकाईत करलंय । खास कनईरके राष्ट्रपति टाना भगत मन से भेंट करलयं और उमनकर संग फोटो खिंचवालंय। सेबेरा टाना भगत राष्ट्रपति ठीन आपन पुराना मांग के भी याईद करूवालयं।अनाथ जनजाति समुदाय कर छउवा मनले स्थापित स्कूल भी राष्ट्रपति पहुंच के छउवा मन से बात कईरके आनंदित भेलंय।

देश कर पहिला राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद कर भी गुमला आगमन होई रहे । मुदा राजेंद्र बाबू आजादी कर आंदोलन के तेज करेक लागिन आजादी आउर राष्ट्रपति बनेक कर पहिले आय रहयं। अब सब कर मन में एके गो सवाल उठत्थे। राष्ट्रपति तो सबकुछ देख के चईल गेलंय। अब राष्ट्रपति कतैय समझलंय आउर का सोचबंय इहां कर आदमी के का लाभ देबयं । नेतरहाट फिल्ड फायरिंग इबटक विकास आउर देश कर सुरक्षा लागिन बहते जरूरी हय। इकर बारे राज्यपाल आउर जनजाति समाज कर नेता मनसे का बतियालंय। ई तो नी बताय सकीला । मुदा आवे वाला दिन बताई। जेकर इहां कर अबदीन के इंतजार रही।

भारत फिर से हीट वेव के घातक दौर में प्रवेश कर रहा है

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने चेतावनी दी है कि इस साल गर्मी का मौसम सामान्य से 1 डिग्री सेंटीग्रेड अधिक गर्म रह सकता है। यह लगातार दूसरा वर्ष है, जब मौसम विभाग ने सामान्य गर्मियों (मार्च-मई 2020) की तुलना में एक गर्म मौसम की भविष्यवाणी की है। आईएमडी का पूर्वानुमान ऐसे समय में आया है, जब वैज्ञानिकों ने पहले ही चेतावनी दी है कि 2020 पिछले दस साल के मुकाबले सबसे गर्म वर्ष साबित होगा। यह वर्ष के पहले दो महीनों के मौसम की स्थिति पर आधारित है। इस साल का जनवरी माह पिछले 141 साल में सबसे गर्म रहा था। नासा ने हाल ही में कहा है कि 6 फ-रवरी को अंटार्कटिका का तापमान सबसे अधिक रिकॉर्ड दर्ज किया गया।मौसम विभाग के अनुसार, आने वाला गर्मी का मौसम कुछ अपवादों को छोड़कर पूरे देश में गर्म रहेगा। विभाग ने एक प्रेस विज्ञप्ति में कहा, " उत्तर-पश्चिम, पश्चिम और मध्य भारत में मार्च-अप्रैल-मई में मौसम का औसत तापमान सामान्य से अधिक गर्म रहने की संभावना है।" आम तौर पर हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और अरुणाचल प्रदेश जैसे ठंडे राज्य गर्मियों के दौरान सामान्य तापमान से 1 डिग्री सेंटीग्रेड ऊपर रिकॉर्ड किया जा सकता है। पिछले साल भारत ने एक अभूतपूर्व गर्म लहर (लू) का सामना किया, जो मार्च के पहले सप्ताह से ही शुरू हो गई थी। जून के पहले सप्ताह तक, हीटवेव (लू) का सामना लोगों ने लगभग 73 बार किया। राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) ने 2019 में 23 राज्यों में हीटवेव चलने की सूचना दी, जबकि 2018 में 19 राज्यों में हीट वेव रिकॉर्ड की गई थी।

किसानों के हित के लिए छह महीने बाद सरकार ने प्याज के निर्यात पर लगा प्रतिबंध हटाया

प्याज किसानों को ज्यादा फायदा पहुंचाने के लिए केंद्र सरकार ने प्याज के निर्यात पर लगे प्रतिबंध को हटाने का फैसला ले लिया है। पिछले करीब छह महीने से देश में प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध लगा हुआ था। रबी फसल में प्याज की बंपर पैदावार होने से इसकी कीमतें गिर सकती हैं। इस संदर्भ में खाद्य मंत्री रामविलास पासवान ने ट्वीट कर कहा है कि, 'देश में प्याज की बंपर फसल और बाजार में प्याज की स्थिर कीमतों को देखते हुए सरकार ने प्याज के निर्यात पर लगी रोक को हटाने का फैसला किया है। पिछले साल मार्च महीने में 28.4 लाख टन के मुकाबले, इस साल मार्च में प्याज की पैदावार लगभग 40 लाख टन होने का अनुमान है।

पटना में नहीं बच रहे ट्रांसलोकेट किये गये पेड़

एजेंसियां

पिछले साल जब बिहार की राजधानी पटना में सड़कों की चौड़ा करने और दूसरे निर्माण कार्यों की वजह से पुराने पेड़ों की कटाई होने लगी थी तो शहर के जागरूक नागरिकों ने उसका तीखा विरोध किया था। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के हस्तक्षेप के बाद उस वक़्त बिहार सरकार ने कहा था कि अब पेड़ों की कटाई नहीं होगी, उन्हें मशीन से ट्रांसलोकेट (स्थानांतरित) किया जाएगा। उस वक़्त बाहर से मशीन मंगवा कर कुछ पेड़ों को स्थानांतरित किया भी गया, मगर जुलाई, 2019 से ही पेड़ों के स्थानांतरण का काम ठप है, क्योंकि पटना नगर निगम ने इस काम के लिये जरूरी पांच ट्रांसलोकेशन मशीनों की खरीदारी नहीं की है।

एक सरकारी आवास समूह तैयार करने के लिये पटना के गर्दनीबाग मोहल्ले से 75 हजार पुराने पेड़ों को हटाना है, मगर ट्रांसलोकेट मशीन नहीं होने की वजह से परियोजना भी रुकी है और पेड़ों का स्थानांतरण भी। पटना नगर निगम की मेयर सीता साहू का कहना है कि जून, 2019 में ही पांच मशीनों की खरीदारी के लिये 5 करोड़ की योजना स्वीकृत हुई थी। मगर राशि के अभाव में अब तक मशीन खरीदी नहीं जा सकी।

शहर के तरु मित्र फाउंडेशन से जुड़े पर्यावरण कार्यकर्ता नागेश कहते हैं कि हमने शुरू से ही इस पद्धति का विरोध किया। क्योंकि हमें मालूम है ट्रांसलोकेशन की प्रक्रिया छोटे पेड़ों में ही सफल होती है, बड़े पेड़ों में नहीं। नागेश की बात इसलिये भी सच मालूम होती है, क्योंकि पटना के आर ब्लॉक-दीघा सड़क के किनारे ट्रांसलोकेट करके लगाए गए तमाम पेड़ सूख गए हैं। इस सड़क के किनारे 15 सौ पेड़ों को लगाने की योजना है। इसके अलावा शेष पेड़ों को गंगा नदी के किनारे लगाने की योजना है। नागेश कहते हैं, वैसे भी लगातार प्रदूषण की मार झेल रहे पटना शहर से किसी भी पेड़ को हटाना ठीक नहीं। गर्दनीबाग जैसे इलाके से हटा कर पेड़ों को गंगा के किनारे लगाने से क्या लाभ। गंगा तट का पर्यावरण तो वैसे भी ठीक रहता है, हमें शहर की आबोहवा ठीक करने की जरूरत है। नागेश की संस्था तरुमित्र ने पटना शहर में पेड़ों की कटाई को रोकने के लिये हाइकोर्ट में जनहित याचिका दाखिल की थी। बाद में नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने शहर से पेड़ों की कटाई पर रोक लगा दी।

वायु प्रदूषण से त्रस्त है चीन

चीन में वायु प्रदूषण देश में एक बड़ी समस्या है, ऐसे में इसने एशियाई देशों की रहनुमाई करते हुए अधिक अनुकूल क्षेत्रीय विनियामक और निगरानी दृष्टिकोण अपनाया है। पेइचिंग में सरकार ने एकीकृत आयोजना, निगरानी और चेतावनी देने संबंधी दृष्टिकोण अपनाया है जिसमें अनेक संक्रामक क्षेत्रों में स-झा मानदंडों का निर्माण भी शामिल है। वर्ष 2017 में पेइचिंग और तियानजिन शहरों तथा हेनान, हेबेई, शेनडोंग और शांक्सी प्रांतों के लिए संयुक्त कार्य योजना अपनाई गई। इसने तथाकथित ''2+26'' शहरों को अपनी औसत पीएम 2.5 सघनता कम करने तथा पिछले वर्ष के मुकाबले प्रदूषित दिनों की संख्या में 15 प्रतिशत से अधिक की कटौती करने को कहा। इस संयुक्त क्षेत्र ने अत्यधिकप्रदूषण के खिलाफ अपनी आपातकालीन प्रतिक्रिया योजना में सुधार भी किया है

गरमा मूंग की खेती करें किसान: डॉ डीएन सिंह

संवाददाता

कृषि वैज्ञानिकों ने रबी फसल शोध का निरीक्षण किया

रांची :बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान एवं कृषि रसायन विभाग तथा शस्य विज्ञान विभाग के रबी फसल शोध प्रक्षेत्रों का कृषि वैज्ञानिकों के दल ने निरीक्षण किया। निरीक्षण में निदेशक दिया। उन्होंने वैज्ञानिकों को सुखा सहिष्णु फसल एवं फसल प्रभेद तकनीक को बढ़ावा देने पर जोर दिया अनुसंधान डॉ डीएन सिंह ने कृषि प्रणाली में मृदा स्वास्थ्य बनाये रखने को प्राथमिकता देने पर बल। राज्य में वर्षा आधारित खेती को देखते हुए किसानों को चालु माह एवं मौसम में गरमा मूंग की खेती करने की सलाह दी। इसकी खेती से राज्य का फसल विभव 300 प्रतिशत तक होने और भूमि की उर्वरता शक्ति बने रहने की बात क-ही। इस निरीक्षण में वैज्ञानिकों ने गेहूं, सरसों, चना एवं तीसी शोध प्रक्षेत्रों को देखा। मृदा विज्ञान विभाग द्वारा चालु रबी मौसम तीसी फसल के विभिन्न तकनीकी शोध पर जोर दिया जा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तीसी प्रभेद दिव्या एवं प्रियम को समेकित पोषक तत्व प्रबंधन, मृदा स्वास्थ्य एवं लाभ, फसल अवशेष एवं बायोचार की कसौटी पर परखा जा रहा है. राज्य में तीसी खेती की संभावनाओं एवं किसानों की आय में बढ़ोतरी को देखते हुए विश्वविद्यालय तीसी खेती के विभिन्न लाभकारी आयामों को विकसित करने पर जोर दे रहा है। मृदा विभाग के अध्यक्ष डॉ डीके शाही ने वैज्ञानिक दल को 1955 से चल रहे स्थाई उर्वरक शोध प्रक्षेत्र एवं 1972 से संचालित दीर्घ कालीन उ-र्वरक प्रबंधन शोध प्रक्षेत्र में गेहूं फसल पर प्रभावों से अवगत कराया। डॉ शाही ने दोनों शोध प्रक्षेत्रों के परिणाम के आधार पर झारखण्ड के किसानों को यूरिया मात्र तथा यूरिया एवं डीएपी मात्र का प्रयोग नहीं करने की सलाह दी। सफल और टिकाऊ खेती के लिए उर्वरक की अनुशंसित मात्रा के साथ बुझा चुना एवं बढ़िया ढंग से सड़े गोबर खाद का प्रयोग करने की बात कही। मौके पर वैज्ञानिकों ने शस्य विभाग के जैविक खेती खेती, फसल प्रणाली, समेकित कृषि प्रणाली एवं खर-पतवार सबंधी शोध प्रक्षेत्रों का निरीक्षण किया। विभागाध्यक्ष डॉ राघव ठाकुर ने शोध तकनीकों की जानकारी वैज्ञानिकों को दी। मौके पर डॉ बीके अग्रवाल, डॉ आरआर उपासनी, डॉ एस कर्मकार, डॉ अरविन्द कुमार, डॉ एसबी कुमार,डॉआशा सिन्हा एवं शोधरत छात्र - छात्रायें मौजूद थे।

दिवगंत साहित्यकारो के जन्म दिवस पर पौधरोपण एक अच्छी पहल:परी पासवान

संवाददाता

रांची :25फरवरी को छात्र क्लब पर्यावरण मंच के संरक्षक नीलम शर्मा के अध्यक्षता में पदमभूषण आवार्ड द्वारा सम्मानित देश के प्रसिद्व साहित्यकार अमरनाथ झा का जन्म-दिन पौधा रोपण एवं पौधा वितरण कर हीनु किलबर्न कॉलोनी में मनाया गया। इस अवसर पर मुख्यअतिथि मिस युनिर्वस परी पासवान, विशिष्ट अतिथि विश्वकर्मा युवा सुरक्षा मंच के मुख्य संयोजक संतोष कुमार श्रेयांस, वरिष्ट संरक्षक धीरेन्द्र प्रसाद एवं छात्र क्लब ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष शिव किशोर शर्मा, मौजुद थे। कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियो को धरेलु पौधा भेंटकर स्वागत किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ, अमरनाथ झा के चित्र पर पुष्पअर्पित कर किया गया। शिव किशोर शर्मा ने अमरनाथ झा के जीवन ईतिहास पर प्रकाश डालते हुए कहा उनका जन्म 25.02.1897 को बिहार के मधुबनी जिला मे हुआ था। उनके पिता का नाम गंगानाथ झा था, वे प्रसिद्व साहित्यकार, शिक्षा शास्त्री एवं कवि भी थे। उन्हे वर्ष 1954 में पद्मभुषण उपाधि से सम्मानित किया गया था। वे बिहार के लोकसेवा आयोग के अध्यक्ष एवं काशी हिन्दु विश्वविद्यालय के कुलपति भी रह चुके थे। हिन्दी मातृभाषा को राजभाषा बनाने में उनका बहुमुल्य योगदान था। उनका निधन 02.09.1955 को हुआ था।

मुख्य अतिथि परी पासवान ने पेड़-पौधो का जीवन में महत्व को बतलाया एवं कहा देश कि हरियाली एवं मन कि शांति के लिए पर्यावरण हरा-भरा होनी चाहिए। पेड़-पौधो से ही हमें शुद्व ऑक्सिजन प्राप्त होता है एवं ऑक्सिजन रूपी अमृत से ही हम जीवित है।

रंगीन मछली पालन से आर्थिक लाभ एवं आत्मनिर्भर बनाने हेतु 27-02 मार्च तक ट्रेनिंग प्रोग्राम चलाया गया। प्रोग्राम में जानकारी देते डॉ एच एन द्विवेदी, निदेशक मत्स्य, झारखंड रांची

सीसीएल में सेवानिवृत कर्मियों को भावभीनी विदाई

रांची :सीसीएल मुख्यालय के विभिन-न विभागों में कार्यरत कर्मियों सर्वश्री सु-शील कुमार सिंह, महाप्रबंधक (ई एण्ड एम), सतर्कता विभाग; राबिन गुप्ता, अधीनस्थ इंजीनियर (असैनिक), नगर प्रशासन, गांधीनगर कॉलोनी; उत्तम राज, कार्यालय अधीक्षक ए1, श्रमशक्ति विभाग; सत्येंद्र कुमार सिंह, अकाउंटेंट, ए1 , सीसीएल प्रेस विभाग, अरूण कुमार मिश्रा, कार्यालय अधीक्षक 'ए' कंपनी सेक्रेटरी के सचिवालय, उपेंद्र नाथ चौधरी, एएसएसआई, सुरक्षा विभाग; सोहन राम,ड्राईवर कैट सामान-य प्रशासन विभाग तथा केन्द्रीय अस्पताल गांधीनगर से मनोज कुमार सिन-हा, वरीय प्रबंधक (वित्त), गौतम दास, चीफ तकनीशियन 'ए 1' भोला राम, सहायक लैब तकनीशियन को आज सीसीएल परिवार की ओर से सीसीएल मुख्यालय, रांची में ''सम्मान समारोह'' का आयोजन कर भावभीनी विदाई दी गई।

सुगर ट्री : यह उपयोगी पौधा है जिसके पत्तियों और फूलों का इस्तेमाल शुगर के मरीजों द्वारा करने पर काफी लाभ पहुंचाता है। यह तस्वीर हमारे एक जागरूक पाठक ने हमें भेजा है ।

मांटेसरी प्ले स्कूल कांके रोड में आयोजित फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में न्यूज पेपर से बने हुये ड्रेस में प्रणया शंकर को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। ड्रेस में जीरो वेस्ट का संदेश दिया गया है

समाचार पत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से विवरण

घोषणा

फार्म-4

1. प्रकाशन स्थल	: रांची
2. प्रकाशन अवधि	: साप्ताहिक
3. मुद्रक का नाम	: केदार प्रसाद सिंघल
क्या भारत के नागरिक हैं	: हां
पता	: प्लॉट नंबर 535/1272ललगुटवा, पीएस - रातू, रांची, झारखंड
4.प्रकाशक का नाम	: मनोरंजन सिंह
क्या भारत के नागरिक हैं	: हां
पता :	: सरोवर नगर, देवी मंडप रोड, पोस्ट : हेहल, पीएस : सुखदेव नगर, रांची, झारखंड
5.संपादक का नाम	: मनोज कुमार शर्मा
क्या भारत के नागरिक हैं	: हां
पता :	: सरोवर नगर, देवी मंडप रोड, पोस्ट : हेहल, पीएस : सुखदेव नगर, रांची, झारखंड
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक से साझेदार या हिस्सेदार हों।	: सन कम्युनिकेशन

मैं मनोरंजन सिंह एतद द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

हस्ताक्षर
मनोरंजन सिंह
(प्रकाशक का हस्ताक्षर)

अखबार के स्वामी सन कम्युनिकेशन के लिये प्रकाशक मनोरंजन सिंह द्वारा प्रकाशित तथा मेसर्स डी. बी. कॉर्प लिमिटेड,प्लॉट नं535 एवं 1272 ललगुटवा पुलिस स्टेशन, रातू, रांची (झारखंड) से मुद्रित और सन कम्युनिकेशन,अपोजिट कब्रिस्तान गेट नं.-2, टीवीएस गली, रातू रोड, रांची-834001 (झारखंड) से प्रकाशित। संपादकः एम.के.शर्मा * (पी.आर.बी. अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये उत्तरदायी)आर.एन.आइ. पंजीयन क्रमांक : **JHAHIN/2019/78094**, email:greenrevolt2019@gmail.com.☎ 0651-2283018, 8539978825, 8825374626. समस्त विवाद रांची न्यायालय के अधीन होंगे।